National Education Policy- 2020

Common Minimum Syllabus for Uttarakhand State

Universities and Colleges

Four Year Undergraduate Programme-

FYUP/Honours Programme/Master in Arts

PROPOSED STRUCTURE FOR FYUP/MASTER'S

SANSKRIT SYLLABUS

W.e.f. 2025-26

DEPARTMENT OF SANSKRIT

बहुविषयक अध्ययन पाठ्यक्रमों हेतु स्नातक पाठ्यक्रम की रूपरेखा एवं प्रारूप (संस्कृत विषय का पाठ्यक्रम)									
Year	Sem.	Core (DSC) Credit 4	Electives (DSE) Credit 4	General Electives (GE) Credit 4	Ability Enhancement Course (AEC) Credit 2	Skill Enhancement Course (SEC) Credit 2	Internship/ Apprenticeship/Project/Community Outreach (IAPC) Credit 4	Value Addition Course (VAC) Credit 2	Total Credits= 22
UndergraduateCertificate/ Diploma/ Bachelor of in Multidiscplinary Study-SANSKRIT									
I	I	संस्कृत नीतिसाहित्य एवं व्याकरण	X	श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मप्रबन्धन			x	-	
	II	संस्कृतमहाकाव्य, छन्दोऽलंकार एवं नाटक	X	श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग			x	-	
II	III	संस्कृतसाहित्य, भारतीयसंस्कृति एवं व्याकरण	उपनिषद् एवं पुराण	संस्कृतसाहित्य में मानवीयमूल्य			x	-	
	IV	संस्कृतसाहित्य,साहित्यकार परिचय एवं निबन्ध	स्मृति एवं स्तोत्रकाव्य	संस्कृत साहित्य में बोधिचित्त			x	-	
III	V	काव्यशास्त्र, दर्शन एवं व्याकरण	भारतीय दर्शन	संस्कृतसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना	x		जनपद में संस्कृतभाषा का प्रभाव : सर्वेक्षण		
	VI	वैदिकवाङ्मय का अध्ययन	उपनिषद् साहित्य	स्वास्थ्य–विज्ञान	x		पाण्डुलिपि विज्ञान		

List of all Papers Semester-wise Titles of Papers					
Undergraduate Certificate in Multidiscplinary Study-SANSKRIT					
Year	**Sem.**	**Course Code**	**Paper Title**	**Theory/ Practical**	**Credite**
First Year	I	DSC 1	संस्कृत नीतिसाहित्य एवं व्याकरण	Theory	4
		GE 1	श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मप्रबन्धन	Theory	4
	II	DSC 2	संस्कृतमहाकाव्य,छन्दोऽलंकार एवं नाटक	Theory	4
		GE 2	श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मयोग	Theory	4
Undergraduate Diploma in Multidisciplinary Study-SANSKRIT					
Second Year	III	DSC 3	संस्कृतसाहित्य, भारतीयसंस्कृति एवं व्याकरण	Theory	4
		DSE 1	उपनिषद् एवं पुराण	Theory	4
		GE 3	संस्कृतसाहित्य में मानवीयमूल्य	Theory	4
	IV	DSC 4	संस्कृतसाहित्य,साहित्यकार परिचय एवं निबन्ध	Theory	4
		DSE 2	स्मृति एवं स्तोत्रकाव्य	Theory	4
		GE 4	संस्कृत साहित्य में बोधिचित्त	Theory	4
Bachelor of in Multidisciplinary Study-SANSKRIT					
Third Year	V	DSC 5	काव्यशास्त्र, दर्शन एवं व्याकरण	Theory	4
		DSE 3	भारतीय दर्शन	Theory	4
		GE 5	संस्कृतसाहित्य में राष्ट्रीय चेतना	Theory	4
		IAPC 1	जनपद में संस्कृतभाषा का प्रभाव : सर्वेक्षण	Theory	4
	VI	DSC 6	वैदिकवाङ्गमय का अध्ययन	Theory	4
		DSE 4	उपनिषद् साहित्य	Theory	4
		GE 6	स्वास्थ्य–विज्ञान	Theory	4
		IAPC 2	पाण्डुलिपि विज्ञान	Theory	4

COURSE INTRODUCTION

Programme outcomes (POs)	
PO1	साहित्य मानव संवेदना की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्त्रोत रहा है। कलाओं में यह सम्पूर्ण कला है। साहित्य– समाज का दर्पण है। स्नातक उपाधि में इस विषय के चयन से विद्यार्थी वर्ग साहित्य के अध्ययन से तत्कालीन समाज एवं संस्कृति से अवगत होंगें।
PO2	सहज एवं स्वाभाविक रूप से भाषा–कौशल प्राप्त कर उनमें प्रभावशाली अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न होगी।
PO3	आत्मविश्वास से युक्त एवं नेतृत्व क्षमता प्राप्त होगी।
PO4	मूल्यपरक व्यक्तित्व से युक्त होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे।
PO5	विद्यार्थी संघ लोक सेवा आयोग एवं प्रादेशिक लोक सेवा आयोगों के परीक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित संस्कृतसाहित्य की आधार एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त कर सकेगें।
PO6	विद्यार्थियों को लेखन, वाचन एवं अध्ययन की दृष्टि से भाषागत दक्षता प्राप्त हो सकेगी।
PO7	व्याकरण के अध्ययन से उच्चारण शुद्धता प्राप्त होगी जिससे ग्रन्थों के पठन–पाठन में दक्षता मिलेगी।
PO8	भारतीय ज्ञान परम्परा के अन्तर्गत विद्यार्थी हमारे प्राचीन साहित्य एवं नैतिक मूल्यों से अवगत होंगे।
PO9	भारतीय दर्शन के अन्तर्गत आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों से विद्यार्थी परिचित होंगे।
PO10	संस्कृत शब्द का अर्थ है संस्कार की हुई, परिमार्जित एवं शुद्धता से परिपूर्ण अतः संस्कृत भाषा के अध्ययन से साहित्यिक भाषा का सम्यक बोध हो सकेगा।
PO11	नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से मूल्यवान् व्यक्तित्वधारी होकर भारतीयता के बोध के साथ वैश्विक नागरिक के रूप में भावी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे।
Programme specific outcomes (PSOs)	
PSO1	सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा के रूप में संस्कृत भाषा के प्राचीन महत्व एवं उसकी वर्तमान प्रासंगिकता को जानने–समझने योग्य होंगे।
PSO2	संस्कृतसाहित्य की विभिन्न विधाओं (गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण, दर्शन, कथा इत्यादि) के सुपरिचित माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।
PSO3	धर्म–दर्शन, आचार–व्यवहार, नीतिशास्त्र एवं भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान् एवं कुशल नागरिक बनेगें।
PSO4	समसामयिक समस्याओं के समाधान के रूप में संस्कृत साहित्य में निबद्ध सर्वाङ्गीणता के प्रति शोधपरक दृष्टि का विकास होगा।
PSO5	संस्कृतभाषा अध्ययन, सम्भाषण, से जीविकोपार्जन के योग्य हो जायेगें।
PSO6	संस्कृतसाहित्य, भारतीयसंस्कृति ,भारतीय दर्शन, संस्कृत व्याकरण आदि का बोध हो सकेगा।
Course Outcomes: (COs)	

CO1	विद्यार्थी स्नातकउपाधि पाठ्यक्रम के अन्तर्गत मुख्य विषय के रूप मे साहित्यशास्त्र, दर्शन एवं व्याकरण का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करेगें।
CO2	पाठ्यक्रम के अन्तर्गत, उपनिषद् पुराण एवं स्तोत्रकाव्य से परिचित होगें।
CO3	स्नातक उपाधि के पाठ्यक्रम में विद्यार्थी वैदिकवाङ्मय ,एवं धर्मशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करेगें।
CO4	पाठ्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय ज्ञानपरम्परा के अन्तर्गत भारतीय दर्शन, एवं नीतिकथाओं के अध्ययन से विद्यार्थी का चारित्रिक उन्नयन होगा।
CO5	पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्मृति साहित्य का अध्ययन कर उसके महत्व से परिचित होगें।
CO6	कौटिलीय अर्थशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थी परिचित होगें।इस प्रकार धर्म–दर्शन, आचार–व्यवहार, नीतिशास्त्र के मूलतत्त्वों को जानकर उत्तम चरित्रवान् मानव एवं कुशल नागरिक बनेंगे। प्रस्तावित विषय–संस्कृतसाहित्य की विविध विधाओं एवं वैदिकवाङ्मय पर आधारित विषय पर लघुशोधकार्य से विद्याार्थियों की शोधपरक बुद्धि का विकास होगा। सर्वेक्षण, अन्वेषण एवं मनन–चिन्तन से उनका बौद्धिकस्तर बढेगा साथ ही समसामयिक समस्या के निदान का मार्ग भी प्रशस्त होगा।
CO7	संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं एवं संस्कृतसम्भाषण से विद्याार्थियों की वाक्शक्ति का विकास होगा।
CO8	संस्कृत महाकाव्य के अध्ययन से उनमें निहित महान् चरित्रों का अध्ययन कर आत्मसात् करेंगे एवं संस्कृत महाकाव्य मे प्रयुक्त रस, छन्द, अलंकारों के माध्यम से काव्यशास्त्रीय तत्त्वों को समझने की क्षमता प्राप्त करेंगे।
CO9	विद्यार्थी श्रीमद्भगवद्गीता के अन्तर्गत प्रतिपाद्य विषय के अध्ययन से कर्मसिद्धान्त एवं अध्यात्मज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
CO10	उपनिषद्, पुराण एवं स्तोत्रकाव्य के अध्ययन से विद्यार्थी सांस्कृतिक एवं सामाजिक चेतना से परिचित होंगे।

Department of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
Discipline Specific Course	4	3	1	0		Nil

Undergraduate Certificatein Multidiscplinary Study			
Programme:- SANSKRIT		Year: I	Semester: I Paper- DSC I
Course Code: DSC1	Course Title: **संस्कृत नीतिसाहित्य एवं व्याकरण**		

Course Outcomes:अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी संस्कृत नीतिसाहित्य से परिचित हो सकेंगे।
2. संस्कृत नीतिसाहित्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
3. नीतिसाहित्य में प्रयुक्त नैतिकशिक्षा का बोध कर सकेंगे।
4. संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे।
5. संस्कृत वर्णों के शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास होगा।
6. स्वर एवं व्यंजन के मूल भेद को समझ कर पृथक् अर्थावगमन की क्षमता उत्पन्न होगी।
7. स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग संधि का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।

Unit	Topic
Unit I	नीतिशतकम्– (प्रारम्भ की पाँच पद्धतियाँ)–संस्कृत नीतिसाहित्य का परिचय, भर्तृहरि का जीवनवृत्त एवं नीतिसाहित्य का योगदान, मूर्ख पद्धति, विद्वत्पद्धति, मान–शौर्य–पद्धति, अर्थपद्धति, दुर्जनपद्धति के प्रत्येक पांच–पांच श्लोकों का अर्थ एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी।
Unit II	हितोपदेश–मित्रलाभ (प्रारम्भिक दो कथायें)–नीतिकथाओं का विकास एवं महत्त्व, श्रीनारायणपण्डित का जीवनवृत्त एवं कृतियों का परिचय, हितोपदेश की प्रथम दो कथाओं का सारांश (वृद्धव्याघ्रपथिकयोः कथा एवं मृगजम्बुकयोः कथा), अनुवाद एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी।
Unit III	व्याकरण– संज्ञाप्रकरणम्–माहेश्वरसूत्राणि, लघुसिद्धान्तकौमुदी के संज्ञाप्रकरण से सूत्र संख्या– 1/3/3, 1/1/60, 1/3/9, 1/1/71, 1/2/27, 1/2/29, 1/2/30, 1/2/31, 1/1/8, 1/1/9, 1/1/69, 1/4/109, 1/1/7 एवं 1/4/14।
Unit IV	व्याकरण– शब्दरूप लेखन मात्र– राम, रमा, हरि, नदी, गुरु, अस्मद् एवं युष्मद्। धातुरूप– पठ्, गम्, भू, कृ, लिख्– पाँचों लकारों में लेखन मात्र– लट्, लृट्, लोट्, लङ् एवं विधिलिङ्।

Suggested Reading:

1. नीतिशतकम्, जनार्दन शास्त्री पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली।
2. नीतिशतकम्,मनोरमा हिन्दी व्याख्या सहित, ओमप्रकाश पाण्डेय, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. हितोपदेश–सम्पादक डॉ0 प्रभुनाथ द्विवेदी, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. हितोपदेश सं0 जीवानन्द विद्यासागर, कलकत्ता।
6. भर्तृहरिविरचितम् नीतिशतकम्, बाबूराम त्रिपाठी (सम्पादक), महालक्ष्मी प्रकाशन,आगरा।
8. लघुसिद्धान्तकौमुदी–श्री वरदराजाचार्यकृत–'ललिता'–संस्कृत–हिन्दी टीकोपेता–डॉ0 कौशलकिशोरपाण्डेय–चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
7. लघुसिद्धान्तकौमुदी–श्री वरदराजाचार्यकृत–व्याख्याकार श्रीधरानन्दशास्त्री–चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
8. Bhartṛhari Nītiśtakam (Sanskrit), Prof. c. Upendra Rao, (extensive translation in three languages with grammatical notes and helpful
exercises of 50 verses out of 100 verses on morals and ethics written by famous poet Bhartrihari in Sanskrit), Rashtriya Sanskrit Sansthan, New Delhi, 2009.

Department of Sanskrit, Soban Singh Jeena University, Almora

CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISITES OF THE COURSE

TEACHING HOURS- 60

Course Title	Credits	Credit Distribution of the Course			Eligibility Criteria	Pre-Requisite of the Course (if any)
		Lecture	Tutorial	Practical/Practice		
General Electives	4	3	1	0		Nil

Undergraduate Certificatein Multidiscplinary Study			
Programme:- SANSKRIT		Year: I	Semester:I Paper- GE II
Course Code: GE 1	Course Title: **श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मप्रबन्धन**		

Course Outcomes: अधिगम उपलब्धि

1. विद्यार्थी श्रीमद्भगवद्गीता के अन्तर्गत प्रतिपाद्य विषय से अवगत हो सकेंगे।
2. श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से आत्मप्रबन्धनसे अवगत होंगे।
3. मानवजीवन में आत्मप्रबन्धन को आत्मसात् करने में सक्षम होंगे।
4. विद्यार्थीआत्मप्रबन्ध के ज्ञान से प्रत्येक कार्य को सम्यक् रूप से पूर्ण कर लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

Unit	Topic
Unit I	महर्षि वेदव्यास का परिचय, श्रीमद्भगवद्गीता का परिचय एवं प्रतिपाद्य विषय।
Unit II	श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित इन्द्रिय, मन, बुद्धि, आत्मा का स्वरूप तथा कार्य।
Unit III	आत्मा एवं मन की भूमिका एवं त्रिगुणों का स्वरूप एवं कार्य तथा आत्मप्रबन्धन अर्थ एवं स्वरूप।
Unit IV	आत्मप्रबन्धन अर्थ एवं स्वरूप, इन्द्रियनिग्रह अर्थ एवं स्वरूप तथा आत्मप्रबन्धन की प्रासङ्गिकता।

Suggested Reading:

1. श्रीमद्भगवद्गीता–गीता प्रेस गोरखपुर।
2. श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दी टीकाकार–डॉ0 श्रीकृष्ण त्रिपाठी।
3. श्रीमद्भगवद्गीता (मधुसूदनी संस्कृत टीका)–श्री सनातन देव।
4. श्रीमद्भगवद्गीता–डॉ0 बाबूराम त्रिपाठी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
5.गीताविज्ञानभाष्यम्–डॉ0 रामप्रकाश सारस्वत, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा।
6.गीता रहस्य भूमिका–बालगंगाधर तिलक, आनन्दाश्रम पूना। प्रथम संस्करण–1919।